अविनाशी निर्विकार परम् पद प्राप्त महापुरुष भगवान् (पिताजी) ने भगवद् गीता के ज्योतिर्मय, रहस्यमय 'आज्ञाकारिता' के अखण्ड विधान के 'तत्त्व-रहस्य' को समझाने हेतु 'श्री सत्संग-सुधा' नामक ग्रन्थ को आठ-आठ पृष्ठों के सात खण्डों में तैयार किया और फिर इन सातों खण्डों का संयुक्त रूप से विस्तार कर ४८-४८ पृष्ठों का 'ॐ आनन्दमय सूत्र' नाम से दो भागों में प्रकाशित करवाया।

इन ग्रन्थों में सर्वशक्तिमान् सर्वत्र सब रूपों में विद्यमान ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी के सृष्टि-चक्र की अखण्ड आज्ञाकारिता के आनन्दमय परम पद की प्राप्ति का और ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी के सृष्टि-चक्र के विरुद्ध 'स्वेच्छाचारिता पूर्वक' धर्म, कर्म कर्ताओं के जीवन को 'दुःखमय-अशान्तिमय' का कथन करते हुए एवं उनके जीवन को धिक्कारते हुए व्यर्थ ही जीने का श्राप 'श्री गीता अ० ३ श्लोक १६ में कथन कर श्री गीता अ० ९ श्लोक १२ में उनकी सम्पूर्ण आशाओं, सम्पूर्ण कर्मों तथा सम्पूर्ण-ज्ञान को व्यर्थ बता, श्री गीता अ०३ श्लोक ३२ में उनको सम्पूर्ण ज्ञान में भ्रष्ट हुए समझाने का कथन करते हुए अन्त में अ०१६ श्लोक १९-२० में बारम्बार आसुरी योनियों को ही प्राप्त होने का कथन किया।

अतः सम्पूर्ण दुःखों से मुक्ति हेतु केवल अखण्ड विधान की आज्ञाकारिता के प्रभाव और माहात्म्य का कथन करते हुए अन्त में श्री गीता अ० १८ श्लोक ६६ में कथन किया है और पूर्ण आश्वासन दिया कि तू सम्पूर्ण कर्त्तव्य-कर्मों को मुझमें त्यागकर केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक परमेश्वर की शरण में आ जा, मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा। तू किसी प्रकार का भय मत कर। बस अन्त में

Scanned with CamScanner

आज्ञाकारी भक्त सर्वशक्तिमान् ॐ आनन्दमय भगवान् से प्रार्थना करता है– हे श्री आनन्दमय भगवान्, मेरा मोह नष्ट हो गया, मैंने स्मृति प्राप्त कर ली, अब मैं संशय रहित हो गया हूँ। मैं आपकी आज्ञा का पालन करुँगा। (करिष्ये वचनं तव)

ॐ आनन्दमय भगवान् के आज्ञाकारिता के अखण्ड विधान का पालन करने के समान संसार में कोई भी धर्म-कर्म, मुक्तिदायक परमपद प्राप्त करने का साधन नहीं है।

सच्चा मुक्तिदायक परमपद प्राप्त करने हेतु धर्म-कर्म का मार्ग आज्ञाकारिता से ही खुलता है। यही श्री गीता शास्त्र का सार 'तत्त्व' है। ध्यान समाधिमग्न तत्त्वदर्शी महापुरुषों की शरण ग्रहण करने से ही सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है। (श्री गीता अ० ४ श्लोक ३४)

अर्थात गीता शास्त्र वर्तमान में उपलब्ध ७०० श्लोकों का वह अतुलनीय व अमूल्य ग्रन्थ है जिसके हर श्लोक के एक-एक शब्द से मानव-जीवन के कहे व अनकहे रहस्य प्रकट होते हैं और अगले ही शब्द में रहस्य का निवारण भी सम्भव होता है। श्रीमद्भगवद्गीता के परम प्रचारक हमारे दादा गुरु परम पूज्य श्री जयदयाल गोयन्दका जी गीताप्रेस (गोरखपुर) के संस्थापक को हमारे गुरुदेव 'श्री आनन्द योगी आनन्दमय' 'जयदेव भगवान' के नाम से सम्बोधित करते थे।

Scanned with CamScanner